आधुनिक हिंदी कविता

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भाटी
डॉ० संगीता वर्मा

आधुनिक हिंदी कविता

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० संगीता वर्मा

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

आधुनिक हिंदी कविता

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० संगीता वर्मा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३
ISBN 978-93-5891-552-5

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : १२०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Adhunik Hindi Kavita Edited by
Dr. Okendra, Dr. Balak Ram Bhadri, Dr. Sangita Verma

प्राक्कथन

आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास : विविध आयाम

साहित्य भाषा के माध्यम से जीवन की मार्मिक अनुभूतियों को अनुभव करने की कलात्मक अभिव्यक्ति है। साहित्य समाज का दर्पण है। हिंदी साहित्य भारतीय अस्मिता की गरिमा का वाहक है। इस व्यापक ऐतिहासिक आधार पर कोई भी हिंदी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा गया है। आधुनिक काल की प्रधान विशेषता यह है कि उसमें साहित्य की विविधता है। जो भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, नई कविता आदि कविता के विविध रूपों की रचना होती रही है। इसके साथ दूसरी प्रधान विशेषता यह है कि इसमें साहित्य की अनेकों विधाओं में रचना हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिक काल में समाज में बड़ी ही तेजी से परिवर्तन होते रहे हैं और इन्हीं परिवर्तनों के फलस्वरूप सामाजिक स्थिति के परिवर्तन के अनुरूप साहित्यिक शैली और विधाओं में लगातार परिवर्तन होता रहा है। इसी कारण आधुनिक काल को विभिन्न कालों में विभाजित किया गया है।

छायावाद आधुनिक हिंदी कविता का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक मानव समाज के समुचित विकास के विभिन्न गम्भीर क्षेत्रों में उथल–पुथल (स्वतंत्रता संग्राम आदि) के दौर से जुड़ा है। आधुनिक हिन्दी कविता का विकास और छायावाद के स्वरूप को समझने के लिए आधुनिक हिंदी कविता के युग विभाजन पर नए सिरे से विचार करना आवश्यक है। जहाँ

८

आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नव जागरण

–डॉ. **शोभना कोक्काडन**

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय–सांस्कृतिक कविता की जातीय और क्रान्ति धर्मी मुद्रा का आविर्भाव ब्रिटिश साम्राज्यवाद के टकराव और संघर्ष की परिस्थिति में होता है। पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति पाने का प्रथम जनशक्ति से संघटित प्रयास 1857 ई के स्वाधीनता संग्राम देखा जा सकता है। यह स्वाधीनता संग्राम आधुनिक भारतीय जागरण की शुरूआत का समर्थ रूप है। इस स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व फौजीवर्दी में किसानों मजदूरों ने किया और देशी राजाओं नवाबों ने जनता की सहायता की। अपनी मूल भावना में यह युद्ध, धर्म, वर्ण, जाति, संप्रदाय, प्रदेश आदि की भावना से मुक्त एक राष्ट्रीय चरित्र का संपूर्णता में वाहक था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद भेद भाव की जिस नीति से इस देश को शासित कर रहा था, उस नीति की यह सबसे बड़ी पराजय थी । सभी भारतीय भाषाओं में इस युद्ध को लेकर अपार लोक साहित्य की निर्मिति की हैं।

"आधुनिक काल के भारतीय नवजागरण ने राष्ट्रीय–सांस्कृतिक कविता को भीतर से आंदोलित उमंथित किया है। किन्तु यह मानना भारी भूल होगी कि हमारा यह यह नव जागरण पश्चिम की या अंग्रेजों की देन हैं। आज भारतीय संस्कृति और इतिहास पर गहराई से दृष्टि डालने पर यह तथ्य प्राप्त हो जाता है कि हमारा नवजागरण हमारी अपनी परिस्थितियों और

Professor & Head, Dept. of Hindi, Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women (Deemed to be University) Coimbatore, Tamil Nadu

एशिया के नवजागरण से जुड़ा हुआ है।"[1] इस नवीन चेतना ने ही भारतीय मानस में अपनी परंपरा पर पुनर्विचार, पुनर्व्याख्या और पुनर्मूल्यांकन की चेतना को जन्म दिया ।

राष्ट्रीय चेतना का विकास

बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में हिन्दी कविता राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख हुई। तिलक, गोखले, गांधीजी आदि के राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण करने पर देशभर में एक राष्ट्रीय ध्येय का विकास हुआ। तत्कालीन कवियों में यह विशेष रूप से ध्वनित हुआ। सन् 1920 के बाद स्वतन्त्रता आंदोलन गांधीजी से परिचालित हुआ। इसलिए तत्कालीन कवियों की रचनाओं का प्रेरणा श्रोत गांधीजी भी रहे हैं। राजनैतिक नेता, विदेशी वस्तुओं के परित्याग और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के प्रचार का स्वर उठा रहे, अब तक जनता में देशभर से दासता का जुआ उतार फेंकने की एक प्रबल उमंग जागृत हो चुकी थी। जनता को सचेत करने में कवि लोग भी भरसक प्रयत्न करते रहे। ज्यों ज्यों शासन की क्रूरता बढ़ती रही त्यों त्यों भारतीयों में स्वाधीनता की उमंग सशक्त होती गई। कवियों ने तत्कालीन सभी दृश्य अपनी रचनाओं में चित्रित करके जनता में राष्ट्रीय जोश उत्पन्न कर स्वराज्य आंदोलन को सफल बनाने में भारी योग दिया। राष्ट्रीय नवजागरण के फलस्वरूप सारे भारत में मनुष्य व्यापार के सभी स्तरों में कई तरह के परिवर्तन आने लगे।

मैथिलीशरण गुप्त, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, सियाराम शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, आदि कवियों ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता में देश प्रेम, बलिदान, करुणा और आस्था के गान गाते रहे हैं। स्वदेश संगीत में गुप्त जी की प्रभावोत्पादक हुंकार कोटि कोटि हृदयों को स्पर्श करती हुई इन शब्दों में गूंज उठती हैं–

"धरती हिलकर नींद भगा दे,
वज्र नाद से व्योन जागा दे,
दैव और कुच्छ लाग लगा दे,
निश्चय करूं कि भारत हूँ मै,
हूं, या था , चिंतारत हूं मैं।[2]

पराधीनता और दमन के प्रति विद्रोही स्वर

इस राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण की चेतना का उत्साह पराधीनता और दमन के विरुद्ध संघर्ष में मिलता हैं। यह अखंड भारत हमारा है, यह हमारी पावन मातृभूमि हैं, और उसपर हमारा ही अधिकार है। हमारी मातृभूमि पर आकर विदेशी शक्तियाँ शासन करें, शोषण करें, भाषा और संस्कृति को नष्ट करे, यह अपमान असह्य एवं लज्जाजनक हैं। हम पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ कर नष्ट हो जाएँ दृयह भावना विद्रोह और संघर्ष का बीजवपन कर रही थी। जैसे जैसे आजादी के आंदोलन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का दमन चक्र तीव्र होता गया वैसे वैसे भारतीय कवियों की वाणी में बलिदान और वीरता की उमंग का स्वर जोर पकड़ता गया है। "भारतीय जन जीवन में विद्रोह की जो प्रचंड ज्वाला भड़क उठी थी, उसे 'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी ने तड़प के स्वर में लिखा–

बलि होने की परवाह नहीं, मैं हूँ कष्टों का राज्य रहे।।
मैं जीताजीता, जीता हूँ , माता के हाथ स्वरज्या रहे।।[3]

विदेशी कटु नीति के विषय में जनता अब पूरी सचेत थी और वह दासता के बंधन से मुक्त होने के लिए विह्वल हो उठी थी। देश भक्ति की अखंड भावना से प्रेरित होकर रामनरेश त्रिपाठी का क्रांतिपूर्ण यह स्वर कितना प्रभावोत्पादक है–

'प्रजा रुष्ट है इस कुतन्त्र से निश्चय होगी क्रान्ति

अत्याचार हटा कर तब मैं ग्रहण करूंगा क्रान्ति।[4]

देश की आर्थिक दुरवस्था, बढ़ती हुई महंगाई, देश के धन का विदेश जाना, टैक्सों के लग जाना आदि से लोग आर्थिक अनीति का अनुभव कर रहे थे। देश का धन विभिन्न करों के रूप में इंग्लैंड जाने लगा। भारतेन्दु के शब्दों में–

'कुछ तो वेतन में गयो, कुछूक राज कर माहिं
बाकी सब व्यौहार में गयो गहयो कुछ नाहि
निरधन दिन–दिन हॉट है भारत भुव सब भांति,
ताहि बचाई न कोउ सकत निज भुज बुधि बल कान्ति।[5]

देश भक्ति की अखंड भावना से प्रेरित होकर रामनरेश त्रिपाठी का क्रांतिपूर्ण यह स्वर कितना भावोत्पादक है–

"प्रजा रुष्ट है इस कुतन्त्र से निश्चय होगी क्रान्ति
अत्याचार हटाकर तब मैं ग्रहण करूंगा शांति"।[6]

स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी माखनलाल चतुर्वेदी आजादी के दीवाने होकर हृदय का आक्रोश व्यक्त करते है–

'क्यों पड़ी परतंत्रता की बेड़ियाँ?
दासता की हाय। हथकड़ियाँ पड़ी?
क्षुद्रता की छाप छाती पर छपी।
कंठ में जंजीर की लड़ियाँ पड़ी
दास्य भावों के हलाहल से हटे ।
मर रहा प्यारा हमारा देश क्यों ?

(राष्ट्रीय वीणा, प्रथम भाग, पृ.6)

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति गांधीजी थे। उन्होने भारतीय राजनैतिक रंगमंच पर प्रवेश करते ही कांग्रेज में संपूर्णतः परिवर्तन लाकर उसे जनता की संघटना

बनाई। गांधीवादी के हिन्दी कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, रामररेश त्रिपाठी, सियाराम शरण गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय है।

सांस्कृतिक नवजागरण

राष्ट्रीय चेतना की तरह सांस्कृतिक चेतना का पुनरुत्थान इस काल की विशेषता है। भारत की राष्ट्रीय–सांस्कृतिक सृजनात्मकता को दयानंद ,रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, आनी वि़सेंट, अरविंद ने भीतर से मथ दिया और उसमें अपनी संस्कृति के सुधार की शक्ति आयी । सभी प्रदेशों में यह आवाज उठने लगी कि दासता भारतीयों के आत्मसम्मान के लिए अत्यंत खातक है । प्रत्येक कवि और चिंतक में यह ग्लानि एवं विक्षोभ का भाव था चाहे उसे खुलकर व्यक्त करने का नैतिक साहस उसमें कम रहा हो। उस क्षति की पूर्ति के लिए ही उसने प्राचीन गौरव का स्मरण किया और देश में पुनरुद्धान का प्रबल आंदोलन आंधी के वेग से गतिशील रहा ।

अतीत गौरव का गान

भारतीय कवियों ने मुक्त मन से भारत के प्राचीन गौरव का गान किया है। प्राचीन संस्कृति और वैभव की वंदना अनुराग और उत्साह की स्वर धारा में ढलकर आत्म–विमुग्ध कर लेती है। इस युग के जागरूक कवियों ने प्राचीन संस्कृति का गौरव गान तथा अपनी पूजा भूमि की गरिमा का वर्णन कर जनता के हृदय में सांस्कृतिक प्रौढ़ता की रूपरेखा बनाई। अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को सशक्त बनाना और उसे नई स्फूर्ति प्रदान करना इस युग के कवियों की प्रवृत्ति थी। तत्कालीन शोचनीय अवस्था को

"जहं मारी को डर नहीं, अरू अकाल को वास।
जहं करे सुख संपदा, बारह मास निवास।।
जहं प्रबल को बल नहीं, अरु निबलन की हाय ।
एक बार सौ दृश्य पुनः आंखिन देहु दिखाया।।[7]

ऐसे भारत को पुनः एक बार देखने की इच्छा कवि में हैं। राधाकृष्णदास अपनी कविता में भारत के पूर्व महापुरुषों के जीवन की प्रेरणा लेकर देश का उत्थान करना चाहते थे–

'कहाँ परीक्षित कहाँ जनमेजय,कहाँ विक्रम कहाँ भोज
नन्द वंश कहाँ चन्द्रगुप्त कहाँ, हाय कहाँ वह ओज ।"8

द्विवेदी जी एकता की महिमा का गुणगान करते हुए देश की सुख समृद्धि की कामना प्रकट करते हैं–

'बल दो हमें ऐक्य सिखलाओ
संभालो देश होश में आओ
मातृभूमि सौभाग्य बढ़ाओ
मेटो सकाल कलेश,
हिन्दू, मुसलमान ,ईसाई यश गावें सब भाई–भाई
सब के सब तेरे रौदाई फूलो, फलो स्वदेश'।[9]

हमें एहसास परक बोध है कि भारतीय संस्कृति एक अखंड धारा है। जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, श्रवण, जैन, बौद्ध इन सभी से मिलकर भारतीय संस्कृति जन्मी है। इसी भावधारा को इस देश के सभी विचारकों, ज्ञानियों, तपस्वियों, संतों, समाज सुधारकों ने आगे बढ़ाया है कि हमारी अखंडता ही हमारी शक्ति है। गुप्तजी के अनुसार सभी धर्मों तथा संप्रदायों के लोगों में वे हिन्दू रक्त का अस्तित्व मानते हैं और सबको भारत के भक्त भी–

'वैष्णव, शैव, शाक्त, सीख जैन,

हो कि न हो या कुछ हो ऐन,
पर तुम में हैं हिन्दू रक्त,
हो इस पुण्य भूमि के भक्त।"[10]

भारत वर्ष मात्र अपनी नैसर्गिकता के लिए विख्यात नहीं, वरन वह विपुल ज्ञान का भंडार होने के कारण सदा अन्य देशों का पथ प्रदर्शन करता रहा है। मातृभूमि की प्रशंसा 'प्रेमधन' मुक्त कंठ से करते हैं। उन्हें अपने स्वर्ग समान देश पर गर्व हैं। उनके शब्दों में–

'जय जय भारत भूमि भवानी
जाकी सुयश पताका जग के दसहूँ दिसि फहरानी
सब सुख सामग्री पूरित ऋतु सकल समान सोहानी
जा भी सोभा लखि अल्का अरू अमरावती सिखानी
धर्म सूर उयो नीति जहं गई प्रथम पहचानी।'

(भारत वंदना, प्रेमधन सर्वस्व , प्रथम भाग पृ 629)

जिस प्राचीन संस्कृति का यशोगान कवियों ने किया वह हिन्दू कालीन भारत तथा हिन्दू संस्कृति ही है। परंतु ऐसा करने में कवियों का उद्देश्य किसी के प्रति विरोध की भावना प्रकट करना नहीं था। वे तो सबका हिट चाहते थे और उनके हृदय में समस्त देशवासियों के कल्याण की भावधारा प्रवाहित होती थी।

मातृ भाषा प्रेम सांस्कृतिक संदेश देते हुए तत्कालीन कवि गण अपनी मातृभाषा में सर्जना करने की धेय रखा था। मातृभाषा ही रचनाकार को सच्चे काव्य गौरव से सम्पन्न और समर्थ बना सकती है। यही कारण है कि इस समय सभी कवियों ने जागरूकता के साथ अपनी अपनी प्रादेशिक भाषाओं के गौरव को पहचानकर स्वाभिमान एवं स्वदेशाभिमान की भावना को बहुत बुलंद किया। "हिन्दी भाषा क्षेत्रों में इसी भावना और चेतना के प्रतिनिधि

भारतेन्दु, प्रेमधन , राधाकृष्णदास जैसे कवि थे । जो "निज भाषा उन्नति' का जयनाद गुंजाते रहे। *(मैथिलीशरण गुप्त, प्रासंगिकता के अंतःसूत्र कृष्णदत्त पालीवाल, पृ 137)*

द्विवेदी ने हिन्दी की अवनति पर वेदना प्रकट करते हुए जाति तथा समाज से इसे अपनाने का अनुरोध किया है। वे कहते हैं–

'हिन्दू होकर भी हिन्दी में यदि कुछ भी न भक्ति के लेश
दूर देश की भाषाओं से यदि इतना हैं प्रेम विशेष
इंगलिस्तान अरब, फारिस को तो अब तुम कर दो प्रस्थान
यहाँ तुम्हारा काम नहीं कुछ, छोड़ो मेरा हिंदुस्तान।"

(द्विवेदी काव्यमाला, पृ 448)

उपसंहार :– आधुनिक राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य को व्यापक संदर्भों मे जागरण की कविता कह सकते हैं। इस कविता में गंभीर मूल्यों की प्रतिष्ठा को स्थान मिलता गया है। संक्षिप्त रूप मे कह सकते हैं कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता जितनी संग्रहशील रही है उतनी ही विकास शील भी। राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविताओं ने पराधीन भारत की सभी समस्याओं पर विचार करते हुए दिशा दृष्टि दी है। जनता को अंग्रेजों के हाथों हुई दुर्दशा का बोध कराकर उनके स्वर्णिम अतीत का स्मरण दिलाया और जनता को राष्ट्रीय कर्तव्य के पालन की प्रेरणा दी। यह कविता आज भी हमारी चेतना को स्फूर्ति देती है और एक विशिष्ट ऐतिहासिक दृसांस्कृतिक कर्म सौन्दर्य से हमारा साक्षात्कार कराती है। यह कविता पूरे आत्मविश्वास से भारत के प्राचीन संस्कृति के सार तत्वों का संचय करती है और देश काल की प्रवृत्तियों–स्थितियों के अनुकूल जीवन के नवीन मानव मूल्यों को भी स्वीकार करती चलती है। युग धर्म और स्वधर्म दोनों को एक साथ रखकर इस कविता ने भारतीय अस्मिता को मुक्त वाणी दी है। सच्चे अर्थों में, यह मानव को

सुलाने की नहीं, जगाने की कविता है, हमारी लोक जागरण क परंपरा का यह गौरव पूर्ण इतिहास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

१. मैथिलीशरण गुप्त, प्रासंगिकता के अंतःसूत्र, कृष्णदत्त पालीवाल, पृ 127,
२. मैथिलीशरण गुप्त स्वदेश संगीत, पृ. 59
३. मैथिलीशरण गुप्त, प्रासंगिकता के अंतःसूत्र, पृ. 144
४. मिलन, पंचम सर्ग पृ 46)
५. व्रजरतन्दास, (सं) भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग 2, पृ 736
६. मिलन, पंचम सर्ग, पृ 46
७. बनारसी दास चतुर्वेदी, बालमुकुंद गुप्त ग्रंथावली, प्रथम भाग, पृ 58–59
८. श्याम सुंदरदास, (सं) राधाकृष्ण ग्रंथावली पृ 8
९. द्विवेदी काव्यमाला, पृ 453–454
१०. भारत भारती, पृ 70